उन्नीसवीं शताब्दी के उतरार्द्ध में हिन्दी पट्टी में सामाजिक एवं सांस्कृतिक नवजागरण

महेश्वर प्रसाद सिंह

भारतीय नवजागरण का आंदोलन मूलतः साम्राज्यवाद द्वारा भारत के खिलाफ किये गये संस्कृति आक्रमण के विरोध में उत्पन्न आंदोलन था जिसका स्वरूप साम्राज्यवाद–विरोध तथा भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठ उपलब्धियों को सामने लाकर भारतीय जन आवाम के इस हमले को निरस्त करने का प्रयास था। इस नवजागरण आंदोलन की विशेषता यह रही कि इसने अंधराष्ट्रवाद की संकुचित भावना को प्रश्रय नहीं दिया, बल्कि ब्रिटिश साम्राज्यवाद द्वारा लायी गई वैज्ञानिक उपलब्धियों को स्वीकारा, मगर उसके आधार पर अंग्रेजी चिंतन की इस धारा का विरोध किया कि अंग्रेज भारत को सभ्य बना रहे हैं, भारत पिछड़ा देश रहा है और इसके सभ्यता का पाठ अंग्रेज ही पढ़ा सकते हैं। यों तो नवजागरण काल की सभी विचारधाराओं में साम्राज्यवाद विरोध समान रूप से वर्तमान था, मगर उनके विरोध की रणनीति और कार्यनीति में अंतर भी था।